Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

थारू जनजाति की आर्थिक एवं परपम्परागत जीवन शैली

राजकुमारी* **प्रो. ज्योति शाह****

* शोध छात्रा, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.) भारत
** शोध पर्यवेक्षक, डॉ0 अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर कालेज, ऊँचाहार, रायबरेली (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – थारू जनजाति उत्तर भारत की प्रमुख जनजातियों में से एक है, जो मुख्यता तराई क्षेत्र विशेषकर उत्तर प्रदेश के बहराइच, खीरी और नेपाल की सीमा से लगे क्षेत्रो में निवास करती है। इनका आर्थिक जीवन प्राकृतिक संसाधनों और परंपरागत जीवन–शैली पर आधारित है। थारु समाज को आजीविका प्रमुख साधन कृषि है, जिसमे धान, गेहूं, गन्ना और सब्जियों की खेती प्रमुख है। महिलाऐं कृषि कार्यो में सामान रूप से भाग लेती है। पशुपालन मछली पकड़ना, शिकार करना तथा कुटीर उद्योग आदि इनके प्रमुख आर्थिक स्रोत है। पारम्परिक रूप से ये आत्मनिर्भर रहे है किन्तु आधुनिक समय में इनकी आर्थिक सरंचना में बदलाव आया है। शिक्षा एवं सरकारी योजनाओं के कारण आज थारु समाज धीरे–धीरे आधुनिक व्यवसाय और सेवाक्षेत्र की ओर अग्रसर हो रहा है, फिर भी गरीबी, भूमिहीनता, अशिक्षा और स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ विकास में बाधक बनी हुयी है। यह अध्ययन थारु जनजाति के आर्थिक जीवन की परंपरागत संरचना परिवर्तन एवम् चुनौतियों को समझने का प्रयास है।

शब्द कुंजी – कृषि, पशुपालन, आजीविका, श्रम, मछली पकड़ना कुटीर उद्योग।

प्रस्तावना –नेपाल–भारत सीमा पर शिवालिक पर्वत श्रेणी के दोनों ओर समानांतर तराई पट्टी में थारु नामक एक अत्यधिक पिछड़े समुदाय के लोग बसे हुए है जिन्हें थारु कहा जाता है। इनके निवास का विस्तार भारत में चंपारण से नैनीताल तक का थारुहट क्षेत्र तथा नेपाल देश में, पूर्व में झापा (भेरी अंचल) से लेकर पश्चिम में कैलानी कंचनपुर (महाकाली अंचल) तक है। थारु अर्ध–वन्यजाती है अर्थात न ये पहाड़ी है न ही मैदानी न पूर्ण वनवासी है। ये वस्तुत: उस सीमान्त क्षेत्र के निवासी है जहां से मैदानी भाग प्रारम्भ होता है। उनके गाँव जंगल के सन्निकट है जहां पूरे साल जल उन्हें सुगमता से उपलब्ध हो सके।

थारु समुदाय को सन 1967 में 'जनजाति' घोषित कर भारतीय संविधान की धारा 244(1) के पांचवे अनुच्छेद के अंतर्गत उन्हें संवैधानिक मान्यता दी गई। उत्तर प्रदेश के तराई में पांच जनजातियाँ निवास जरती है। इनमें भोटिया, जौनसारी, बुक्सा, राजही और थारु है। इनमें थारुओ की जनसंख्या सर्वाधिक है।

थारू व्युत्पत्ति– थारु उत्पत्ति के विषय में इतिहासकार भिन्न–भिन्न मत रखते है। विलियम क्रुक्स ने अपनी पुस्तक 'ट्राइब्स एंड कास्ट्स इन नार्दर्न प्रोविंसेज ऑफ़ आगरा एंड अवध' में जातियों एवं कबीलों के बारे में विस्तार से विश्लेषण किया है। यह पुस्तक 1864 ई. में चार खंडो में प्रकाशित किया है। इसके चौथे खंड में थारु जनजाति के कबीले का विश्लेषणात्मक वर्णन किया है। नेसफ़ील्ड ने थारु उत्पत्ति 'थार' से बताते है। जिसका अर्थ है 'वनवासी' या 'वनेचर' होता है। यह एक भ्रांतिपूर्ण मत है क्योकि जंगल के लिए थार शब्द का प्रयोग किसी भी जनजाति में नहीं है। हिंदी शब्दकोष और नेपाली पहाड़ी भाषा में भी 'थार' का अर्थ जंगल नहीं होता है।

अवध गजेटियर में थारुओ को अर्थ और मंगोल को संकर जाति का बताते है। एक अन्य मान्यता के अनुसार थारू जनजाति राजस्थान के थार मरुस्थल में निवास करने वाली जनजाति है। कुछ लोगो की धारणा है की मुस्लिमो ने जब चित्तौड पर आक्रमण किया तो राजपूत महिलाएं अपने कुछ सैनिको के साथ जंगल में चली गयी। धीरे–धीरे वे अपना जीवन जनजातियो जैसा व्यतीत करने लगी। कालांतर में इनसे जो संताने उत्पन्न हुयी। उन्हें थारू कहा जाने लगा।

खरीफ की फसले–धान, मक्का ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, अरहर, कच्ची हल्दी, अदरक कसावा, कोलोकेशिया (अरवी),शकरकंद प्रमुख फसले हैं।
रबी की फसले–यह सर्दियों में बोई जाने वाली फसले है जैसे–सरसों, चना, मसूर, मटर, लहसुन, प्याज।
जायदकी फसलें–यह गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली त्वरित फसल है जैसे–ककड़ी, तरबूज, खरबूज, लोबिया, गन्ना (कुछ क्षेत्रो में निरंतर फसल) सब्जियाँ; लौकी, करेला, तोरई आदि।
कृषि– थारुओं के अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। थारु मुख्यत: धान की खेती करते है जो दलदली प्रकृति की होने के कारण धान की खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होती है। जून से अक्टूबर के महीने में भारी वर्षा होने के कारण ज्यादा उपयुक्त है। इसमें मुख्यत: मोटा लाल चावल जिसे 'साठा' कहा जाता था ज्यादा पसंद करते है। जब वर्षा नहीं होती थी तो वे अरहर, मटर और कोदो नामक एक छोटा काला अनाज उगाते थे। ये फसलों की सिंचाई कृत्रिम नाली बनाकर नहीं करते थे बल्कि निकटतम नाले पर बाँधा बनाकर करते है।

तालिका संख्या– 1: कृषि के समय थारूओं की दैनिक–दिनचर्या

समय	पुरूषों की गतिविधियाँ	महिलाओं की गतिविधियाँ
सुबह 5 से 9 बजे तक	पुरूष उठकर अपने खेतों की ओर चले जाते थे।	जल्दी उठना, घर की सफाई करना, कुओं से पानी लाना, खाना बनाना, बर्तन धोना, खेतों में अपने आदमियों के लिए जाना ले जाना।
सुबह 9 से 11 बजे तक	खेतो में सुबह काम करके भोजन करना, हुक्का पीना फिर पुन: काम पर लग जाना।	वापस आकर अपना भोजन करना, बर्तन एवं रसोई साफ करना।
सुबह 11बजे से दोपहर 3 बजे तक	अभी खेतों में व्यस्त	अनाज को काटने या पीसने से व्यस्त टोकरी या मिट्टी के बर्तन बनाने में व्यस्त
अपरान्ह 3 से 5 तक	खेतों से लौटते हुए, पशुओं को चरने के लिए छोड़ते हुए।	शाम का जाना, घर की सफाई।
शाम 6 से 8 बजे तक	मवेशियों को घर लाना, शाम का खाना। हुक्का पीते हुए लोककथाओं का मनोरंजन	शाम का खाना, घर की सफाई। शाम को भोजन करना, बर्तन साफ करना। पुरूषों की तरह जल्दी सो जाना।

तालिका संख्या-2: पूरे वर्ष की आर्थिक गतिविधियाँ

मौसम	महीने	मौसमी गतिविधियाँ
गर्म	चैत्र (मार्च-अप्रैल)	गेहूँ, चना और कस्सा (एक प्रकार की दाल) की कटाई, अनाजों और उनके भूसे की मडाई निष्पावन और भण्डारण, मछली पकड़ना और शिकार करना।
	बैसाख(अप्रैल-मई)	घरों का मरम्मत और निर्माण, जंगल से ईंधन इकट्ठा करना, जाल, चटाई, टोकरियाँ और रस्सियाँ बनाना और औजारों की मरम्मत करना।
	जेठ(मई-जून)	मछली पकड़ना और शिकार करना, घरों की मरम्मत और पूरक व्यवसाय जारी रहता है।
	आषाढ़(जून-जुलाई)	खरीफ फसलों की बुवाई, जुलाई, जंगली मक्का, चावल, सन और सब्जियाँ (जैसे-रतालू) की बुवाई के लिए मानसून के आगमन पर खेत में काम करना। बाढ़ वाले पानी से मछली पकड़ना।
	सावन (दौरे) (जुलाई-अगस्त)	खरीफ की फसलों की रखवाली, उन्हे जंगली जानवरों से बचाना, धान के खेतों की निराई, जंग ल से फल और पत्ते इकट्ठा करना।
	भदौन(अगस्त -सितम्बर)	मक्के के फसल की कटाई, खेतों की रखवाली।
	कुंवार(सितम्बर -अक्टूबर)	धान की कटाई, मडाई, फटकना और अनाज का भण्डारण करना।
	कार्तिक(अक्टूबर -नवम्बर)	रवी की फसले जैसे-गेहूँ, चना, मटर, मसूर और सब्जियाँ जैसे-आलू, प्याज के लिए कई बार खेतों की जुताई और समतलीकरण
	अगहन(नवम्बर -दिसम्बर)	रवी फसलों की निगरानी, जंगल से ईंधन लाना, अधिक शिकार करना।
	माघ(जनवरी -फरवरी)	शिकार, शादियाँ
	फाल्गुन (फरवरी -मार्च)	मसूर की फसल की कटाई होली उत्सव।

शिकार करना- थारु लोग शिकार के बड़े शौक़ीन होते हैं। ये अपने खेतो के काम से निवृत्ता होने के बाद जंगलो में भ्रमण करते है। इन्हें कभी-कभी हिरणों का पीछा करते और पक्षियों का शिकार करते देखा जा सकता है। जब वे सूअर, हिरन, खरगोश और मुर्गो का शिकार बड़ी मात्रा में करते है तो वे उन्हें गाँव में बाँट देते है। वे पक्षियों को पकड़ने के लिए कुर्किया या खंडीय का प्रयोग करते है। कभी-कभी लोग समूहों में भी शिकार करते है जो बहुधा सफल होते है।

शिकार उनके निपुणता एवं कौशल का परिचायक होता है। कभी-कही महलाए भी उनके शिकारियों के समूह में सम्मिलित होती है;और उनका नेतृत्व करती है, लेकिन मेहनत का काम पुरुष ही करता है।

शिकार के तरीके

कुटियाही: इसमें थारु द्वारा प्रशिक्षित कुत्तों का एक समूह होता है जो हिरणों का पीछा करने और उनके पैरो को पकड़ने लिए होता है। इसे कुटियाही कहा जाता है। आजकल इसका प्रचलन नहीं है। इसमें कुत्तो के मालिक के सर, दिल और खाल मिलता है, जबकि सहयोगियों को मांस का बराबर हिस्सा मिलता हैप्रधान को पैर का हिस्सा मिलता है।

खाबर या बाबर: इसमें जानवरों को पकड़ने के लिए जाल बिछाया जाता है जिसे खाबर कहा जाता है, जो रस्सियों से बना एक जाल होता है। इसे जानवरों के रास्ते में बिछाया जाता है और जाल की डोरी को शिकारी हाथ में पकड़कर थोड़ी दूरी पर बैठ जाता है। जैसे ही जानवर जाल के पास आता है शिकारी डोरी को खीच लेता है, जिससे जानवर आसानी से जाल में फंस जाते है।

खुधाका: यह एक प्रकार का लकड़ी का जाल होता है जो जानवरों के जाने के रास्ते पर लगाया जाता है; जैसे ही जानवर इसके ऊपर छलांग लगाते है उसका पैर उसमे फंस जाता है और दूर तक भागकर नहीं जा पाते है।शिकारी उस जानवर को पकड़कर घर वापस ले आते है।

उदार: थारू जंगल से सटे खेतो के बगल में गड्ढा खोदकर उसके ऊपर घास और पत्तियों से ढक देते है। मोर और खरगोश इस गड्ढे में फंस जाते है और वे उन्हें पकड़ लेते है।

गोला: थारू लोग आते से बनी जहरीली गोलियां जंगल में रख देते है। फिर दूसरे दिन वे देखने जाते है की कोई जानवर गोली खाकर मरा तो नहीं है। धीरे-धीरे शिकार के ये तरीके लुप्त होते जा रहे है; क्योकि अब वे जंगली सूअर, बारहसिंगा, हिरन, जंगली मुर्गे, और मोर का शिकार अब वे बन्दूको से करना उपयोगी समझते है वे बाघ का शिकार बहुत कम ही करते है।

वनों से पत्तो, फल और जड़े एकत्रित करना - जंगल के निकट होने के कारण थारू लोग फल, जंगली पत्तियों के उपयोग से परिचित है। ये फल मौसम के अनुसार अलग-अलग महीनो में खासकर बरसात में मिलते है। इनमे बन्मेथी, रेवा, फालोसा, बथुआ, लातोफिका, गरजवा, लुचका, पटपरा, फुर्र के पत्तो इकट्ठा करते है।

कुछ फल जैसे-खगसा, परवर, पिंडारे और बिरानी आदि फलो को इकट्ठा करते है जंगल की घास नारी और तलभंसीरे की जड़ गर्मियों में बहुत ही स्वादिष्ट होती है।

निर्माण-कला - थारु लोग निर्माण कला में भी निपुण होते है, वे पत्तो, सरकण्डो और रेशो का काम करते है। थारु लोग साल के पहले पखवाड़े में बांका नामक मजबूत घास पहाडियों की निचली श्रृंखला से बड़ी मात्र में इकट्ठा करते है और इससे वे सुतली और रस्सी बनाते थे। इसका इस्तेमाल वे मछली पकड़ने का जाल, फंदे बनाने और कुएं से पानी खीचने, पशुओ को बाँधने

और कई कार्यो में इसका उपयोग करते थे।

हर गाँव में कुछ थारु ऐसे होते है जो बढ़ईगिरी और लोहार के कामो में भी कुशल और अनुभवी होते थे लेकिन वे निपुणता का दावा नहीं करते है। ये लोग अपने पड़ोसियों को भी श्रमदान देते है। ये लोग अपनी जरूरत की चीजो को स्वयं बना सकते है। जो लोग बढ़ईगीरी में निपुण होते है वो अपनी आवश्यकता की वस्तुएं जैसे–कृषि उपकरण, हल, पटेला, गाड़ियाँ, दरवाजा, खंभे, चारपाई आदि स्वयं बनाते थे।

मछली पकड़ना– थारुओ में मछली पकड़ना एक महत्वपूर्ण सहायक व्यवसाय है; जिसमे पुरुष, महिलाये, बच्चे शामिल होते है, ये जाल एवं फंदों से सुसज्जित होकर समूह में मछली पकड़ने जाते है। मछली पकड़ने के लिए वे विभिन्न उपकरणों का प्रयोग करते है जैसे–काँटा, डोरी, जाल और कीप के आकार की टोकरी।

अन्य तरीको में वे चारे में कोई जहरीली पदार्थ मिलाकर फेंक देते है जिसे खाने के बाद मछलिया मर जाती है, और उनके शव को निकाल लिया जाता है, वे झीलों, गढ्ढो एवं छोटे–छोटे जलाशयों से अपनी रोजमर्रा की जरूरतों के लिए मछलियों को इकट्ठा करते है।

आवास संरचना–थारू जनजाति प्रकृति प्रेमी है और इनकी अधिकांश आवश्यकताएँ प्राकृतिक संसाधनो से पूरी होती है। इनके गाँव एक दूसरे से लगभग एक से दो किमी. की दूरी पर बने होते है। मकानों को बनाने से पहले ये उपयुक्त स्थान का चुनाव करते है, जहां जल भराव ना हो, जंगली जानवरो का आक्रमण ना हो और वहां की जमीन उपजाऊ हो। यदि किसी तरह की असुविधा होती है तो ये अपने गाँव छोड़कर अलग बस जाते है और जाते समय ये अपनी आवश्यकता की वस्तुए भी साथ ले जाते है। इनके मकान बनाने का स्थान भरारा द्वारा चुना जाता है और मकान निर्माण से पूर्व परिवार के मुखिया के द्वारा अगियारी नामक पूजा की जाती है और पूजा के लिए एक गड्ढा खोदा जाता है जहाँ एक केन्द्रीय खम्भा गाड़ा जाना है। घर के देवी–देवताओ को प्रसन्न किया जाता है। इस पूजा में एक मुट्ठी चावल, मसूर के दाल और एक सिक्का कपडे में बांधकर उस गड्ढे के केन्द्रीय खम्भे के नीचे दाल दिया जाता है जिसे 'चूड़ी' कहा जाता है।

निष्कर्ष– थारु जनजाति के आर्थिक जीवन का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि यह समुदाय मुख्यत: कृषि आधारित अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। पारम्परिक रूप से थारु लोग खेती करना, पशुपालन, वनों से उत्पाद इकट्ठा करना, मछली पकड़ना, तथा हस्तशिल्प कार्यो से अपनी आजीविका शामिल है। उनके जीवन में प्रकृति और भूमि का अत्यंत महत्त्व पूर्ण स्थान है क्योकि यही इनके आर्थिक जीवन का प्रमुख स्रोत है।

आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो थारू जनजाति की आय का प्रमुख स्रोत कृषि है, वे छोटे–छोटे खेतो में धान, गेंहू, मक्का, सरसों और सब्जियां उगाते है। खेती मुख्यत: मानसून पर निर्भर होती है, इसीलिए वर्षा की अनियमितता इनके जीवन में अस्थिरता लाती है।इसके अतिरिक्त थारू महिलाएं वन उत्पादों जैसे–शहद, लकड़ी, जड़ी–बूटियाँ और बाँस से बने सामानों को स्थानीय बाजारों में बेंचकर परिवार की आय में सहयोग देती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. नेस्फील्ड: द कलकत्ता रिव्यू 1885 वोल्यूम 80
2. गजेटियर: प्रोविंस ऑफ़ अवधा वाल्यूम–III
3. W. crooke: The Tribe and caste of the North Western provineces and outh.
4. Turner A.C: Census of India 1931 part-1 united provinces of Agra and Oudh.
5. Risley H.H the Tribe and castes of bangal, volumes 2nd.
6. Maiti sameera (2004) The Tharu their arts and crafts.
7. नेसफ़ील्ड: द कलकत्ता रिव्यू 1885 वाल्यूम–80
8. मजूमदार डी. एन. (1985) रेसेस एंड कल्चर्स ऑफ़ इंडिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
9. गजेटियर: प्रोविंस ऑफ़ अवध वाल्यूम– III
10. मजूमदार. डी. एन: द थारुज एंड देयर ब्लड ग्रुप जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल भाग–8 न0, 1
11. लाल पन्ना: कुमायुँ लोकल कस्टम
12. प्रधान हरिदेव 1932: बर्थ कस्टम अमंग द थारुज बाई मैन इन इंडिया
13. मजुमदार. डी. एन.: द फॉर्च्यून ऑफ़ प्रिमिटिव ट्राइब्स, द यूनिवर्सल पब्लिशर्स, लखनऊ, 1944

****